प्रेस विज्ञप्ति

आगम मनीषी की स्मृति–सभा आयोजित

भाग्यषाली संत थे मुनिश्री दुलहराजजी – आचार्यश्री महाश्रमण

राजलदेसर, 28 जनवरी 2011। आचार्यश्री महाश्रमण ने कहा कि हमारे धर्मसंघ के बहुश्रुत मुनिश्री दुलहराजजी स्वामी के बारे में काफी कुछ बातें बताई गई हैं। उनसे मेरा भी पहले मुनि अवस्था में सम्पर्क रहा। जब गुरुदेव तुलसी ने मुझे युवाचार्यश्री महाप्रज्ञजी के साथ लाडनूं जाने का निर्देश दिया तो युवाचार्यश्री महाप्रज्ञजी ने मुनिश्री दुलहराज स्वामी के वर्ग में मेरी पांती करायी। मुनिश्री सुमेरमलजी स्वामी तथा मुनिश्री दुलहराजजी स्वामी के साथ रहा था। मैं चित्तसमाधि में आपके (मुनि सुमेरमलजी 'सुदर्शन' के) पास रहा था, मुझे याद आ रहा है, दुलहराजजी स्वामी के साथ में मैनें दो चातुर्मास किए थे – जोधपुर और आमेट में। बहुत सारे संत साथ में रहा करते थे। मैं उनके पास रहा। मैंने देखा वे काफी शान्त स्वभाव के थे। उनको गुस्सा करते मैनें कभी नहीं देखा और वे एक लगन वाले मुनिश्री थे। आगम कार्य में उनका बड़ा योगदान रहा है कितना–कितना काम उनके हाथ से निपटा होगा, आगम संबंधी और आगम के बारे में भविष्य में इतिहास लिखा जाए तो मुनिश्री दुलहराजजी स्वामी का नाम अच्छे अक्षरों में लिखा जाने वाला नाम हो सकेगा।

आचार्यप्रवर ने कहा कि मुनिश्री पिछले कुछ समय में अवस्था प्राप्त भी हो गए। सेवा की अपेक्षा उनको रहने लगी। हालांकि आचार्य अपने ढंग से व्यवस्था करने का प्रयास करते हैं, परन्तु मेरा मानना है कि आचार्य व्यवस्था तो कर सकते हैं, फिर भी सेवा लेने का तरीका भी अपना होना चाहिए। मुझे लगता है कि मुनिश्री दुलहराजजी स्वामी की आचार्य ने भी व्यवस्था की और साधुओं पर उनका प्रभाव भी अच्छा रहा है। ऐसा लगता है उनके भाग्य ने भी अच्छा काम किया है, वे बड़े भाग्यशाली संत थे। मैनें देखा जब आचार्यश्री विराजमान थे और दुलहराजजी स्वामी अस्वस्थ थे, मुनिश्री प्रतिदिन सुबह–सुबह आचार्यश्री के पास आते, वंदना करते। आचार्यश्री का महाप्रयाण हो गया, उसके बाद वही क्रम मेरे पास आने का शुरू कर दिया। वे मेरे पास आते, जैसे आचार्यश्री के पास वंदना करने आते थे। उन्होंने मुझमें कोई फर्क नहीं किया। जैसे महाप्रज्ञजी थे उस सन्दर्भ में वैसे महाश्रमण भी था। मेरे पास उसी रूप में वे आते और मेरा सम्मान करते और यह हमारी संघ की परम्परा भी है कि गद्दी तो वही है, व्यक्ति भले दूसरे आ गए पर गद्दी तो भिक्षु स्वामी की है।

उन्होंने कहा कि मुनिश्री दुलहराजजी के पास बाहुश्रुत्य था, निकाय व्यवस्था गुरुदेव तुलसी ने की तो उनको भी शिक्षा निकाय के साथ जोड़ा, आचार्यश्री महाप्रज्ञ ने उनको आगम मनीषी के रूप में सम्बोधित किया और वास्तव में वे मनीषी संत थे। एक और उनको अंग्रेजी का अभ्यास था तो दूसरी ओर संस्कृत के जानकार थे और लेखन में बड़े निपुण संत थे। न केवल उन्होंने आगम सम्पादन का कार्य किया बल्कि अन्य साहित्य के अनुवाद में और आचार्यश्री महाप्रज्ञ अथवा मुनिश्री नथमल के साहित्य के सम्पादन में या युवाचार्य श्री महाप्रज्ञ कह दूँ, बात एक ही है। उनके साहित्य के सम्पादन में कितना समय लगाया था और बड़ी बात तो यह है कि कितने–कितने व्यक्ति का निर्माण उनके द्वारा हो गया। आज स्मृति सभा में इतने साधु–साध्वियां, समणियां बोले और सामने बात आई कि कितने–कितने व्यक्तियों का निर्माण उनके द्वारा हुआ, यह अपने आप में विशेष बात है।

सेवा करना हमारा फर्ज है, धर्म है। शासन श्री मुनिश्री राजेन्द्र कुमारजी स्वामी, इनको मैं वर्षों से जानता हूँ और गुरूकुलवास में हम वर्षों तक साथ रहे हैं। मैनें देखा एक ऐसे विनयशील संत है, कितने अध्ययनशील और कार्यशील संत है। मैनें सरदारशहर में आपको शासन श्री के संबोधन से संबोधित किया

था। दुलहराजजी स्वामी के सेवा में आपका अच्छा योगदान रहा है। आपने बहुत अच्छा काम किया, खूब सेवा की और आगे भी अच्छा काम करते रहें।

मुनि जितेन्द्र कुमारजी ने जो हमारे सामने दीक्षित हुए हैं, संभवतः मेरे युवाचार्य की स्थिति में आने के बाद पहली दीक्षा हुई उस बैच में थे और इनको गुरुदेव ने मुनिश्री दुलहराजी स्वामी की सेवा में नियुक्त किया था, उनके पास रखा था। मुनिश्री का कोई भाग्य था कि उनको जितेन्द्र मुनि जैसा साधु मिल गया सेवा करने के लिए। उनकी अच्छी सेवा की है। मैं काफी प्रसन्न हूँ तुम्हारी सेवा से। मैं एक बात तुम्हारे लिए कहना चाहूँगा कि गुरुकुलवास में रखे तो सांझ की वंदना और न्यारा में भेजे तो सिंगाड़े का अग्रणी नियुक्त करता हूँ। हमारे दो संत और है – मुनि कान्ति कुमारजी और मुनि गौतमकुमारजी। वे पास में ही थे, पास में होना अपने आप में सेवा होती है, काम तो करते ही थे, खूब अच्छी सेवा करते रहो। आचार्य प्रवर ने कहा कि इस बार मुनिश्री को शासनसेवी मुनिश्री बालचन्दजी स्वामी का योग मिल गया। बालचन्दजी स्वामी ने शासन की खूब सेवा की है। आपको गुरुदेव तुलसी ने शासनसेवी एवं आचार्य महाप्रज्ञजी ने शासनश्री संबोधन से संबोधित किया। मुनिश्री पानमलजी स्वामी ने अंत समय में नमस्कार महामंत्र आदि का श्रवण कराकर जागरुकता का परिचय दिया। पानमलजी स्वामी बच्चों में संस्कार निर्माण करने में कुशल संत है।

हमारे धर्मसंघ में सेवा का विकास हमारे साधु–साध्वियों में उल्लास का भाव बना रहे। जिस धर्मसंघ में सेवा की व्यवस्था अच्छी होती है वह धर्मसंघ चिरायुष्य रह सकता है।

मुनिश्री दुलहराज स्वामी के प्रति आचार्यश्री महाश्रमण के द्वारा निर्मित पद्य

महाप्रज्ञ गुरु की करी, दीर्घ काल तक सेव।
शासन में नामी बण्यों, संत दुलह स्वयमेव। 1।
आगम शोधन कार्य में, खूब कर्‌यो आयास।
साहित्यिक सेवा करी, पायो ज्ञान प्रकाष। 2।

आचार्यश्री के समय निर्णय तो हुआ था कि बहुश्रुत परिषद् बनायी जानी चाहिए परन्तु आचार्यश्री की विद्यमानता में वो नामों का निर्णय नहीं हो सका। फिर आचार्यश्री का महाप्रयाण हो गया। जो अनुशासन संहिता में धारा है कि आचार्य सप्त सदस्यीय बहुश्रुत परिषद् का गठन करेंगे तो मैनें सोचा कि मुझे वो काम कर देना चाहिए और मैंने सरदारशहर में वो काम किया। सात में से एक नाम मैनें मुनिश्री दुलहराजजी का रखा। वे बहुश्रुत मुनि थे, श्रुतधर मुनि थे, वयोवृद्ध थे। यानी यह नाम मुझे उचित लगा।

''बहुश्रुत परिषद् बणी, प्रथम बार इण बार।
महाश्रमण मेम्बर बण्यों, दुलह अर्हता धार''। 3।

उनमें अर्हता थी इसलिए हमने उनको बहुश्रुत परिषद् का सदस्य बनाया। ऐसे मुनिश्री दुलहराजजी स्वामी दिवंगत हो गए। जिनका अपना धर्मसंघ में स्थान रहा है। पता नहीं उनके जीवन में कितने उतार–चढाव आए होंगे, कितनी स्थितियां आई होगी। कभी उन पर कृपा – कभी अकृपा की सभी स्थितियां बनी होगी। मैं बड़े सम्मान के साथ उनको याद करता हूँ।

संवेदनषील व्यक्तित्व के धनी थे मुनिश्री दुलहराजजी
– साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा

साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा ने कहा कि मुनिश्री दुलहराजजी हमारे शिक्षा गुरु थे। वैसे मैनें कभी उनके पास पाँच मिनट भी बैठकर उनसे बोध पाठ नहीं लिया, कभी पढी नहीं, फिर भी हमारे गुरु कहलाते थे। वे गुरु इसलिए कहलाते थे कि दीक्षित होते ही हमने यहाँ के पाठ्यक्रम का अध्ययन शुरू किया। परीक्षाएं दी तो परीक्षाओं का सारा नियोजन उनके हाथ में था। दीक्षा के प्रथम वर्ष से ही वे हमारे शिक्षा गुरु के रूप में मान्य हो गए। इसलिए पहले तो नहीं लेकिन साध्वीप्रमुखा का दायित्व संभालने के बाद यदा–कदा उनके पास जाने का मौका मिलता और जैसा कि उनके बारे में कहा गया अपने विनोदी स्वभाव के कारण या व्यंग्योक्ति कहने में निपुण होने के कारण वे ऐसी कुछ बातें कहते थे और अचानक ही चुप–चाप खड़े लोगों को हंसा देते थे। जब हम लोगो ने दीक्षा ली उन वर्षों में यानि शुरू शुरू के वर्षों में महोत्सव, चरमोत्सव व जन्मोत्सव आदि जब कभी संघीय आयोजनों के प्रसंग आते तो मुनिश्री दुलहराजजी अवश्य बोलते और वे अपने वक्तव्य में या कविता में भी कुछ नई बात और ऐसे ढंग से कहते थे कि वो जब बोलने के लिए खड़े होते तो हम लोग सुनने के लिए एकाग्र हो जाते थे। उनकी कार्य निष्ठा श्रमनिष्ठा बेजोड़ रही, उन्होंने अनेक साधुओं को, साध्वियों को भी काम करने के लिए तैयार किया। इस दृष्टि से कहा जा सकता है कि उनमें व्यक्ति निर्माण करने की कला थी और वे जिस काम में लग जाते पूरी निष्ठा के साथ करते थे। उनके कारण से कई व्यक्तियों को आगम जैसे गम्भीर क्षेत्र में काम करने का हुनर प्राप्त हुआ। उनका यह विश्वास था कि जो व्यक्ति श्रमशील होता है। मेहनती होता है वह अपने काम में सफल हो जाता है।

वफादारी से कर मेहनत खुद अपने भरोसे जी,
खुदा को याद रख मंजिल स्वयं चल पास आएगी।

साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा ने कहा कि एक बात थी कि वे ज्यादा नहीं बोलते थे लेकिन बोलते थे तो साफ–साफ बोलते थे। और उनकी बात किसी को अच्छी लगे, बुरी लगे। उसकी चिन्ता किए बिना जो कहना होता तो वे कह दिया करते –

अपनी आदत चुप रहते हैं या फिर खरी–खरी कहते हैं,
मावस को मावस कहते हैं पूनम को पूनम कहते हैं।

मुनि राजेन्द्र कुमारजी अभी बोल रहे थे। उन्होंने बताया कि मुनिश्री दुलहराजजी को कभी भाव–विभोर होते नहीं देखा। लेकिन हमने तो उन्हें भाव–विभोर होते हुए देखा और विशेष रूप से गुरुदेव के महाप्रयाण के बाद जब कभी भी गुरुदेव के सन्दर्भ में आचार्यश्री महाप्रज्ञजी के सान्निध्य में गोष्ठी होती, कोई प्रसंग चलते, कोई संस्मरण सुनाने की बात होती तो मुनि श्री से कहा जाता तो वे बोल नहीं पाते। उनकी आंखे गीली हो जाती वे इतने भाव–विभोर हो जाते कि वो कहते कि मुझे गुरुदेव की बहुत याद आती है। वे एक तरफ बहुत दृढ थे और कहा जाता है कि पुरुषों में संवेदनशीलता नहीं होती उनमें मनोबल होता है, धृतिबल होता है लेकिन इस मामले में वो बहुत कमजोर थे और यह तो समय समय की बात है। उन्होंने अपना जीवन जीया। सार्थक जीवन जीया। और जीया ही नहीं उन्होंने अनेक व्यक्तियों का निर्माण किया, तैयार किया। उनके पास रह कर मुनि राजेन्द्र कुमार, मुनि जितेन्द्र कुमार अच्छे काम करने वाले संत के रूप में तैयार हो गए।

इन संतो ने व्यक्त की श्रद्धांजलि

मुनिश्री दुलहराजजी के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए मुनि विमलकुमार ने कहा कि मुनि दुलहराजजी बड़े विद्वान और अच्छे सन्त हुए हैं। दीक्षा के बाद गुरुदेव तुलसी ने मुझे दुलहराजजी स्वामी के पास भेजा। वे बड़े उपकारी थे। मैं उनके उपकार को कभी नहीं भूल सकता। मुनि पानमल ने कहा कि मुनि दुलहराजजी स्वामी के अन्तिम समय का योग बड़ा विचित्र बना। उन्होंने 13 सन्तों के सामने अन्तिम सांसे ली। मुनि किशनलाल ने कहा कि प्रतिक्रमण सीखने से पूर्व ही मेरी दीक्षा हो गई थी। प्रतिक्रमण सीखने का काम मुनिश्री दुलहराजजी के सान्निध्य में हुआ। आचार्यों के प्रति उनके मन में बहुत ज्यादा श्रद्धा थी। आचार्य श्री महाप्रज्ञ की मानसिक, भावनात्मक और विचारात्मक सेवा की। साध्वी विमलप्रज्ञा ने कहा कि दूसरों के काम को भी बिना नाम की भावना के स्वयं पूरा कर देते। वे जिस कार्य को हाथ में लेते उसे लक्ष्य तक पहुँचा देते। मुनि बच्छराज ने कहा कि मुनि दुलहराजजी परम सौभाग्यशाली सन्त थे जिन्हें निर्माण के लिए निर्माता आचार्य तुलसी, भाग्य के लिए भाग्य विधाता आचार्य महाप्रज्ञ और सम्मान के लिए सद्‌गुणदाता आचार्य महाश्रमण मिले। मुनि सुमेरमल (सुदर्शन) ने कहा कि मुनि दुलहराजजी छः भाषाओं के ज्ञाता थे। एक स्थापित साहित्यकार के रूप में अनेकों पुस्तके लिखी, अनेकों ग्रन्थों और पुस्तकों का हिन्दी में अनुवाद किया। मुनि सुखलाल ने कहा कि आगम मनीषी मुनि दुलहराजजी की संघ और साहित्यिक सेवा अविस्मरणीय है। शासन गौरव मुनि धनंजय कुमार ने कहा कि जो रचना आज मैं सुना रहा हूँ, वह रचना आज से 22 वर्ष पूर्व मुनिश्री के सामने सुनाई गयी तो उन्होंने कहा – '' क्या यही रचना मेरी स्मृति सभा में सुनाओगे। मुनिश्री की संसारपक्षीया दोहित्री साध्वी दर्शनविभा ने कहा कि मुनिश्री दुलहराजजी स्वामी में गुरु भक्ति, संघ निष्ठा, कार्य निष्ठा और आध्यात्मिक श्रद्धा बेजोड़ थी। समणी कुसुमप्रज्ञा ने कहा कि मुनिश्री दुलहराजजी स्वामी ने मुझे पुरुषार्थ करना सीखाया, कार्य को व्यवस्थित करना सीखाया। अंतिम समय तक सेवा करने वाले शासनश्री मुनि राजेन्द्रकुमार ने अंतिम दिनों की स्थितियों को व्यक्त करते हुए कहा कि मुनिश्री को कुछ दिनों पूर्व ही आभास हो गया था। उन्होंने मुझसे कहा पूर्णिमा का दिन मेरे लिए अन्तिम दिन होगा। मैं उनकी बात को सुनकर जड़ हो गया। फिर तत्काल सभी सन्तों को बुलाकर मुनि श्री की यह बात उन्हें बताई। ज्यों ही पूर्णिमा का दिन आया वह बात हमारे स्मरण में थी और हमने देखा पूर्णिमा के दिन दोपहर के समय उनकी कही बात अक्षरशः सही साबित हुई। उनका महाप्रयाण हो गया। मुनि जितेन्द्रकुमार ने आचार्यप्रवर के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हुए मुनिश्री के प्रति काव्यमय श्रद्धांजलि अर्पित की। मुनि गौतमकुमार ने अपनी भावनाएं रखी। मुनि बच्छराज के साथ कालू चातुर्मास सम्पन्न कर आचार्य महाश्रमण के आचार्य के रूप में प्रथम बार दर्शन करने वाले मुनि नरेश कुमार ने श्रद्धा व्यक्त की। आचार्यप्रवर ने मुनिश्री बच्छराज स्वामी के मिलन को प्रसन्नतादायी बताया। संचालन मुनिश्री मोहजीत कुमार ने किया।

मुनि पन्नालालजी की स्मृति–सभा आयोजित

ऐसा नम्बर किसी किसी को ही मिलता है – आचार्यश्री महाश्रमण

आचार्यश्री महाश्रमण ने गत दिनों छापर में दिवंगत मुनिश्री पन्नालालजी के प्रति उद्‌गार व्यक्त करते हुए कहा कि उनकी यह विशेषता खास है वे हमारे धर्मसंघ में, वर्तमान के साधु समुदाय में सबसे बड़े थे, ऐसा नम्बर तो कोई–कोई मुनियों को ही मिलता है, जो सबसे बड़े हो जाते हैं। वे दिवंगत हो गए, काफी वर्षों से छापर सेवा केन्द्र में थे और दो वर्षों से मुनि आलोकजी की सेवा चाकरी चल रही है, उन्होंने काफी नाम कमाया है उनको जनता ने सराहा है, हमारे सन्तों में उनकी अच्छी गरिमा है और श्रावकों में भी उनकी अच्छी गरिमा है।